<u>मनोविज्ञान के सम्प्रदाय</u>

3. व्यवहारवाद (Behaviourism):

संरचनावाद और प्रकार्यवाद का 20वीं शताब्दी के शुरुआत में ही विरोध होने लगा। इसी वजह से व्यवहारवाद की स्थापना हुई। इसके पहले बल दिया गया चेतना के तत्वों के अध्ययन पर इस अध्ययन को कुछ वैज्ञानिकों ने बेकार समझा और ये कहा कि हमारे शरीर पर चेतना का जो प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन करना सार्थक है। इसी कारण चेतना की रचना की जगह कार्यों पर जोर दिया गया। पर जब कुछ समय बीत गया तो इस चेतना का अध्ययन करने वाली पद्धति अन्तर्दर्शन विधि की बहुत आलोचना हो गयी। इसके आलोचकों में सर्वप्रथम विलियम जेम्स थे। अब इस व्यवहारवाद को जन्म देने वाले मनोवैज्ञानिक जे.बी. वाटसन थे। इस व्यवहारवाद का क्षेत्र है व्यवहार का अध्ययन करना। वाटसन ने कहा अगर प्राणी को समझना है तो उसके शारीरिक कार्य इन्द्रियों की चेष्टायें और बाहरी क्रियाओं को देखना और समझना होगा। इसमें भाव, संवेदन, प्रतिमा और स्मृति के स्थान पर उसकी चेष्टा या व्यवहार पर ध्यान दिया जाना चाहिए जो कि प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। ये व्यवहार और चेष्टायें दोनों स्वाभाविक और अर्जित होते हैं और मनोविज्ञान इनका अध्ययन करता है ।

व्यवहारवादी सम्प्रदाय मनोवैज्ञानिकों का ऐसा सम्प्रदाय है जो हर प्राणी के प्रत्यक्ष दिखने वाले, स्वाभाविक और अर्जित दोनों व्यवहारों का अध्ययन करता है। प्रमुख व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों में शामिल हैं- पी. बीस, मेक्स्मेयर टालमैन, हल और बी. एफ. स्किनर आदि । जिस समय अमेरिका में 1912-14 में व्यवहारवाद का आन्दोलन चल रहा था, ठीक इसी रूप में मनोवैज्ञानिक 'पावलव और वेशेरेव' (1857-1936) सम्बद्ध सहज प्रक्रिया, अभिसन्धानित सहज क्रिया, और गतिवाहक सहज क्रियाओं पर अपना प्रयोग कर रहे थे। पावलव और

उसके साथी ने पशु और मानवों दोनों पर अपना प्रयोग किया। मनुष्य अपनी परिस्थिति और पर्यावरण से अनुकूलन करने की कोशिश करता है। अथवा मनुष्य अपने को पर्यावरण और परिस्थिति के अनुरूप बनाने या ढालने की की कोशिश करता है। इस व्यवहारवाद में थार्नडाइक का पशु मनोविज्ञान के क्षेत्र में बड़ा योगदान है। इन्होंने मछली, मुर्गा और बिल्लियों पर अपने कई प्रयोग किये और इन प्रयोगों से ये सिद्ध किया कि पशु बुद्धि कम रखने पर भी 'प्रयास और भूल' से या 'त्रुटि' से (Trial and Error) बहुत सी बातों को सीख लेते हैं। पशु प्रयत्न करते रहते हैं और अन्ततः किसी काम को पूरा करने में सफल हो जाते हैं।

व्यवहारवाद का योगदान शिक्षा में (Contribution of Behaviourism in Education) : इसका शिक्षा में निम्नलिखित योगदान है

1. व्यवहारवाद में उत्तेजना अनुक्रियावाद के परिणाम स्वरूप बच्चों की शिक्षा प्रणाली में इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर जोर दिया गया।

2. जो प्रयोग पशुओं पर व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने किया इससे इन लोगों ने सीखने के नियमों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया और अधिगम की प्रक्रिया में प्रयत्न और त्रुटि पद्धति को लागू किया गया।

3. बच्चों के व्यक्तित्व के अध्ययन को व्यवहारवादियों ने आसान बना दिया और वस्तुनिष्ठ भी बना दिया।

4. बाल मनोविज्ञान के या मनोविकास के अध्ययन के लिये प्रोत्साहन मिला।

5. निरीक्षण और मापन पर इस सम्प्रदाय द्वारा बल दिया गया।

6. मानव के विकास और अभिवृद्धि पर पर्यावरण के विकास, प्रभाव और महत्व पर बल दिया।

7. 'पूर्व नियोजित अधिगम' का शिक्षण विधि के रूप में विकास हुआ।

8. संवेगात्मक व्यवहार, अधिगम की विधियों, अधिगम के नियम और सिद्धान्त, मूलप्रवृत्तियों से संबंधित आदतों आदि पर व्यवहारवादी सम्प्रदाय के मनोवैज्ञानिकों द्वारा काफी प्रकाश डाला गया। इससे फायदा ये हुआ कि शिक्षा मनोविज्ञान की प्रगति हो गयी।

9. शिक्षा मानव व्यवहार से सम्बन्ध रखती है और व्यवहार का दोनों पक्ष होता है व्यक्तिगत और सामाजिक। यह

मत इस पर विश्वास करता है कि मानव के सभी व्यवहार, निरन्तर पर्यावरण से अन्तःक्रिया द्वारा सम्पन्न होते हैं।